ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
दीपावली पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 39, अंक 1 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 नवम्बर, 2015 से रविवार 15 नवम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

शिक्षा को हर वर्ग तक पहुंचाने के संकल्प के साथ

एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग का स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न

शिक्षा के विकास में आर्य विद्यालयों की महत्त्वपूर्ण भूमिका – स्वामी सुमेधानन्द

एस.एम. आर्य प. स्कूल का दिल्ली के आर्यसमाज के संगठन में अहम योगदान – महाशय धर्मपाल

एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग (नई दिल्ली) की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में स्वर्ण जयन्ती विस्तृत समाचार एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 5 एवं 7 पर

दीप प्रज्ज्वलित करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं महाशय राजीव गुलाटी, श्री सत्यानन्द आर्य, श्री योगश मुंजाल एवं स्वामी सुमेधानन्द जी। इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन करते बाएं से दाएं - सर्वश्री विनय आर्य, सत्यानन्द आर्य, योगेश मुंजाल, आचार्य अखिलेश्वर, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, राजीव गुलाटी, सुरेन्द्र आर्य, धर्मपाल आर्य एवं श्री सुभाष आर्य जी।

मनमोहक प्रस्तुतियों के माध्यम से सन्देश प्रस्तुत करते एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग (पश्चिम) नई दिल्ली के छात्र-छात्राएं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन –सिडनी आस्ट्रेलिया : 27-29 नवम्बर की तैयारी पूर्ण

फीजी, न्यूजीलैंड, मेल्बर्न, ब्रिसबेन, भारत, मॉरीशस, सिंगापुर, अमेरिका, कनाडा, लन्दन आदि से पहुंचेंगे आर्यजन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
27-29 नवम्बर, 2015

पहली बार होगा आस्ट्रेलिया में आर्यों का वृहद संगम

सिडनी सम्मेलन में नजर आएगा एक लघु भारत – आर्य सुरेशचन्द्र अग्रवाल

दक्षिण प्रशान्त क्षेत्र में आर्यसमाज के संगठन के विस्तार के लिए अहम् है यह सम्मेलन – प्रकाश आर्य

आस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा सभी अतिथियों के स्वागत के लिए तैयार – योगेश आर्य

दिल्ली से अनेक आर्य महानुभावों की भागीदारी होगी इस आर्य महासम्मेलन में - धर्मपाल आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्त्वावधान में आर्य युवा सम्मेलन

6 दिसम्बर, 2015 प्रात: 9 बजे स्थान : आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, जी. टी. रोड पानीपत

आप सब इष्टमित्रों सहित सपरिवार पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

निवेदक : आचार्य विजयपाल (प्रधान) मा. रामपाल आर्य (मन्त्री) आचार्य योगेन्द्र आर्य (संयोजक) आचार्य सर्वमित्र आर्य (सह संयोजक)

वेद-स्वाध्याय

मन की दिव्य शक्ति

वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।। ऋ. 10/57/6
ऋषिः बन्धु सुबन्ध्वादयः।। **देवताः** विश्वेदेवाः।। **छन्दः** गायत्री।।

शब्दार्थ - **सोम**=हे सोमदेव! **तनूषु**=अपने शरीरों में **मनः**=मन को, मनःशक्ति को **बिभ्रतः**=धारण किये हुए **वयम्**=हम लोग **तव व्रते**=तुम्हारे व्रत में है।-तुम्हारे व्रत का पालन करते हैं और **प्रजावन्तः**=प्रजासहित हम लोग **सचेमहि**= तुम्हारी सेवा करते रहें।

विनय - हे सोम! तुम्हारा दिया हुआ, तुम्हारी महाशक्ति का अंशभूत मन हमारे शरीरों में विद्यमान है। इस मन का-इस तुम्हारी अमूल्य देन का हमें गर्व है। इस मन के कारण ही हम मनुष्य हैं। इस मननशक्ति के कारण ही हम पशुओं से ऊंचे हुए हैं। तो क्या अपने शरीरों में मन-जैसी प्रबल शक्ति को धारण किये हुए भी हम लोग तुम्हारे व्रत में न रह सकेंगे? निःसन्देह तुम्हारे व्रत का पालन करना बड़ा कठिन है। तुमने जगत् में जो उन्नति के नियम बनाये हैं, ठीक उनके अनुसार चलना बड़ा दुःसाध्य है, परन्तु जहां तुमने ये कठिन नियम बनये हैं वहां तुमने ही हममें मन की अतुल शक्ति भी दी है, अतः हमारा दृढ़ निश्चय है कि हम अपनी मनःशक्ति के प्रयोग द्वारा सदा तुम्हारे व्रत में ही रहेंगे-कभी इसको भंग न करेंगे-कठिन-से-कठिन प्रलोभन व विपत्ति के समय में भी मनःशक्ति द्वारा व्रत में स्थिर रहेंगे।

परन्तु यह सब व्रतपालन किसलिए है? यह तुम्हारी सेवा के लिए है। यह तुम्हारा दिया मन इसी काम के लिए है। हम चाहते है। कि केवल यह हमारा मन ही नहीं, किन्तु हमारे मन की प्रजा भी तुम्हारी सेवा में ही काम आये। मन में जो एक रचना-शक्ति है, उस द्वारा प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह कुछ रचना कर जाए, कुछ निर्माण कर जाए। यह रचना ही मन की प्रजा है। यदि हम, हे सोम! सर्वथा तुम्हारे व्रत में होंगे तो हमारी यह रचना (प्रजा) भी निःसन्देह तुम्हारी सेवा के लिए ही होगी-इसी में व्यय होगी। एवं, हम और हमारी प्रजा सदा तुम्हारी सेवा में रहें, तुम्हारी सेवा में ही अपना जीवन बिता दें। अब यही संकल्प है, यही इच्छा है, यही प्रार्थना है।

- **आचार्य अभयदेव**

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

विशेष सम्पादकीय

भगवान पर भ्रम

चर्च ऑफ इंग्लैंड में बहुत दिनों से चल रही लैंगिग समानता पर बहस के बीच बिट्रेन के संसद हाउस ऑफ लार्डस में बैठने वाली पहली महिला पादरी रेशॉल ट्रवीक ने कहा है कि ''चर्च ऑफ इग्लैंड'' को भगवान के लिए पुल्लिंग शब्द (He) का इस्तेमाल बंद कर देना चाहिए! उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि भगवान का कोई लिंग नहीं होता। अतः उसे स्त्रीलिंग, पुल्लिग जैसे सर्वनामों से संबोधित नहीं किया जा सकता आपको बताते चले कि रेशॉल ट्रवाक चर्च ऑफ इंग्लैंड की शीर्ष महिला पादरी हैं। वैसे देखा जाये तो पहले दुनिया में महिला पादरी नहीं होती थीं अब पिछले कुछ सालो में जरुर बनने लगी हैं। वह बेहद विन्रम भाव से कहती हैं कि सब कहते हैं कि भगवान ने हमें अपने जैसा बनाया है। यदि उसने हमें अपने जैसा बनाया है तो उसको पुरुष जैसा नहीं देख सकते। भगवान केवल भगवान है उसको नर या नारी की तरह नहीं देखा जा सकता। कई अन्य महिला पादरियों ने भी उसकी बात का समर्थन करते हुए कहा कि भगवान लिंग से परे है अर्थात उनको स्त्रीलिंग या पुल्लिंग का प्रतीक मानकर नहीं पुकारा जा सकता है।

वैसे देखा जाये तो परमात्मा को लेकर दुनिया बहुत भ्रम में जी रही है। और अधिकांश संसार में नकली भगवान बनाकर उनको पूजनीय बना दिया जाता है या यह कहो कि वो पूजनीय हो चुके है! अब इसाई समाज में ही कभी यीशु को ईश्वर का बेटा तो कभी ईश्वर भी कह दिया जाता है और कभी यीशू को सारे संसार के लोगों का दुख हरने वाला भी कह दिया जाता है। बहरहाल, जो भी हो पर रेशॉल ट्रवीक के इस संबोधन के बाद ईसाइयों की पवित्र बाईबिल जरुर संदेह की नजरों से देखी जा सकती है क्योंकि इसा ईश्वर है और यीशू उसका बेटा तो ईश्वर का लिंग जरुर होगा? बाइबल के अनुसार हव्वा ने सारे ब्रह्माण्ड को 6 दिन में बनाया और सातवें दिन उसने विश्राम किया और वह दिन रविवार था। अब प्रश्न यह है कि विश्राम वो करेगा जिसके शरीर होगा और जिसके पास शरीर है वो 6 दिन में इस दुनिया का निर्माण नहीं कर सकता। यदि 6 दिन में इतना विशाल ब्रहमाण्ड बना सकता है तो बच्चे के निर्माण में 9 माह क्यों लग जाते है? वह तो कुछ सैकिण्डों में बन जाना चाहिए। इस बात से बाइबल असत्य या मनोरंजक कहानी से भरपूर पुस्तक साबित होती है।

ठीक कुछ-कुछ ऐसा ही हाल कुरान-ए शरीफ का है। कुरान में बतलाया गया कि अल्लाह ने दोनों हाथों से आदम को बनाया। यदि उसने दोनों हाथो से इंसान को बनाया तो जरुर उसका भी लिंग रहा होगा! क्योंकि शरीर के बिना हाथ संभव नहीं है। इससे साबित होता है कि यह भी पुराणों की तरह कल्पित कहानियों का सग्रंह मात्र हो सकता है?

अब परमात्मा क्या है? जो कण-कण में विद्यमान है, जो निराकार है, जो सर्वव्यापक है जो आदि है, जो अनंत, अजन्मा है वहीं परमात्मा है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के अन्त में मंत्र का सार है ''वेद सब मनुष्यों के प्रति ईश्वर का उपदेश है कि हे मनुष्यों! जो मैं यहां हूँ, वहीं सूर्य आदि लोकों में हूँ, सर्वत्र परिपूर्ण आकाश के तुल्य व्यापक मुझ से भिन्न कोई बड़ा नहीं है' मैं ही सबसे बड़ा हूँ, मैं ही छोटा मेरा निज नाम ओ३म है। अतः अविद्या का विनाश कर आत्मा का प्रकाश करके शुभ गुणकर्म स्वभाव वाला बन।''

अब जो लोग ईश्वर के लिंग के बारे में संशय में है उन्हें एक बात और पता होना चाहिए कि जीवात्मा,परमात्मा और प्रकृति इन सबका कोई लिंग नहीं होता। जो सर्वव्यापक है, उसे शरीर से नहीं जोड़ा जा सकता। अतः रेशॉल ट्रवीक जी आपने जो कुछ अब कहा वो हमारे ऋषि-मुनि करोड़ों साल पहले कह गये कि ईश्वर एक व्यवस्था का नाम है जो अनादि है। सूक्ष्म इतना कि कण-कण में समा जाये और विशाल इतना कि हर पल एहसास करा जाये फिर भी आपको अपना और अपने लोगों का संशय पूर्णरुप से मिटाने के लिए वेंदो की और लौटकर सच्चे ईश्वर को जाना जा सकता है।

ग्रन्थ परिचय

वेद विरुद्धमत खण्डन

प्रश्न 1. 'वेद विरुद्धमत खण्डन' नामक ग्रन्थ में किस मत का खण्डन किया गया है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में **वल्लभ मत का खण्डन** किया गया है। इस पुस्तक का दूसरा नाम **'वल्लभाचार्य मत खण्डन'** भी है।

प्रश्न 2. वल्लभ मत कौन-सा था?

उत्तर : इस मत में **वल्लभ नामक पुरुष को गुरु मानकर** उनके ग्रन्थों के आधार पर आचरण किया जाता था।

प्रश्न 3. स्वामी जी ने इसका खण्डन क्यों किया?

उत्तर : मय मत **पूर्णतः वेद विरुद्ध सिद्धान्तों का प्रतिपादक था।** वल्लभ जो मृत हो चुके हैं, उनका आचार्य होना सम्भव ही नहीं, क्योंकि जो शिष्य को कल्पसूत्र, वेदान्त सहित वेद पढ़ावे वही आचार्य हो सकता है और मरणोपरान्त पढ़ाना सम्भव नहीं। दूसरा, इस मत में **श्री कृष्ण को भगवान माना गया है, जो कि असत्य है।** इसी प्रकार की पाखण्ड युक्त बातें इस मत में फैलाई गई थीं।

प्रश्न 4. स्वामी जी ने इसका खण्डन किस रूप में किया ?

उत्तर : इस मत के सभी **सिद्धान्तों व ग्रन्थों को लेकर,** उनमें से प्रश्न उठाकर उनका खण्डन किया।

प्रश्न 5. इस मत के ग्रन्थ कौन-कौन से हैं?

उत्तर : 'सिद्धान्त रहस्य', 'शुद्धाद्वैतमार्तण्ड', 'सत्सिद्धान्तमार्तण्ड', 'विद्वन्मण्डन', 'अणु भाष्य', 'रस भावना', आदि ग्रन्थ इस मत के माने जाते हैं।

प्रश्न 6. यह खण्डनात्मक ग्रन्थ **गुजराती, हिन्दी** और संस्कृत तीनों भाषाओं में है। संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद महर्षि के शिष्य भीमसेन शर्मा जी ने और गुजराती में अनुवाद महर्षि के प्रमुख शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने किया।

प्रश्न 7. यहां तो केवल वल्लभमत का खण्डन है, फिर 'वेदविरुद्धमत खण्डन' यह नाम क्यों रखा गया?

उत्तर : पहले तो स्वामी जी ने वल्लभमत के सभी सिद्धान्तों का वेद एवं युक्तियों के आधार पर विस्तार से खण्डन किया है। अन्त में उन्होंने लिखा है कि जैसे **वेद और युक्ति से विरुद्ध वल्लभ का सम्प्रदाय है, वैसे ही शैव, शाक्त, गाणपत्य, सौर और वैष्णवादि सम्प्रदाय भी वेद और युक्ति से विरुद्ध ही हैं।** इस कथन से वेद के विरुद्ध सभी मतों व सम्प्रदायों का स्वतः खण्डन हो जाता है।

प्रश्न 8. इसकी रचना महर्षि ने कब की?

उत्तर : इसकी रचना **संवत् 1931, कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या,** मंगलवार के दिन पूर्ण हो गई थी।

प्रश्न 9. इस पुस्तक का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : महर्षि के जीवनचरित्र को पढ़ने से पता चलता है कि इस पुस्तक के **जबरदस्त प्रभाव के कारण** वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायियों ने अनेक बार **महर्षि के प्राण हरण का प्रयत्न** किया।

(महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय से उद्धृत)

अगले अंक में एक और ग्रंथ के परिचय की प्रस्तुति होगी। - सम्पादक

आओ कश्मीर को सहिष्णु बनाएँ

– राजीव आर्य

सहिष्णुता एवं असहिष्णुता पर चल रही बहस के सम्बन्ध में

जिस देश को सहिष्णु बनाने का आन्दोलन छिड़ा है। अब हम चाहते हैं जब देश को सहिष्णु बना ही रहे हैं तो क्यों ना पूरे देश को ही सहिष्णु बनाया जाये। यह क्षेत्रवाद देश के लिए घातक है। देश को सहिष्णु बनाने वाली टीम को सबसे पहले मेरा आमन्त्रण कश्मीर घाटी के अन्दर है, जहां रोजाना 'कश्मीर बनेगा पाकिस्तान' के नारों के साथ सेना के जवानों पर हमले होते हैं। दादरी में इखलाक के बाद से देश को सहिष्णुता का पाठ पढ़ाने निकले इन सेकुलर जमात के ठेकेदारों से मेरा पहला प्रश्न यह है कि क्या ये लोग इस भारतीय क्षमा संहिता के पाठ को कश्मीर में भी पढ़ा सकते है? जहां के अखबार आज भी मजहबी मानसिकता का शिकार होकर लिखते है कि कश्मीर घाटी में हिंदुओं को बसाकर, लाखों सैनिकों को तैनात कर और तथाकथित चुनावों के जरिए कठपुतली सरकार बनवाने से कश्मीर भारत का अटूट अंग नहीं बन जाता है।

दूसरा प्रश्न क्या यह लोग वहां के उन मजहबी ठेकेदारों जो मस्जिद की मीनार से कहते है कि कश्मीरियों ने अपनी तीन पीढियां स्वतंत्रता के लिए बलिदान की हैं, वो भला कैसे भारत के गुलाम रह सकते हैं, इसलिए दुनिया जल्द वो दिन देखेगी जब कश्मीर में स्वतंत्रता का सूरज निकलेगा। उन्हें भी सहिष्णुता का पाठ पढ़ा सकते हैं? या फिर कश्मीरी पंडितों को वापिस कश्मीर में बसाने की बात करने से ही इन लोगों को देश में असहिष्णुता नजर आने लगती हैं। आज इन लोगों ने देश के अन्दर एक विडम्बना पैदा कर दी है जैसे गौहत्या के खिलाफ बोलना, कश्मीर, बंगाल के हिन्दुओं की बात करने को यह लोग साम्प्रदायिकता कहते हैं और जो गाय को इनका निवाला बना दे तो वो इन्हें सहिष्णु और धर्मनिरपेक्ष नजर आते है।

यह लोग आज रो रहे है पर तब कहां थे जब चट्टीसिंहपुरा में मजहबी पागलों ने निर्दोष हिन्दुओं का कत्ल कर दिया था। चलो ये घाव पुराना है। शायद इन्हें अपने सेक्यूलरता के चश्में से दिखाई न दे पर अभी हाल ही में जम्मू कश्मीर में अलगाववादी नेता मसर्रत आलम भट को राजद्रोह के आरोपों में गिरफ्तार किए जाने के बाद श्रीनगर हिंसा भडक उठी और नाराज लोगों ने राष्ट्रध्वज जलाया एवं सुरक्षाबलों के साथ उनकी हिंसक झड़प हुई। राजधानी श्रीनगर का नोहटटा इलाका जंग के मैदान जैसा लग रहा था जहां नकाबपोश प्रदर्शनकारियों ने तिरंगा जलाया उनके और सुरक्षाबलों बीच हुई झडप में दो सुरक्षाकर्मी के करीब दर्जनो लोग घायल हो गए थे। तब इनका यह सहिष्णुता का झुनझुना कहां था?

अभी कुछ महीने पहले पीडीपी विधायक पीर मंसूर जी ने आम जनता को संबोधित करते हुये कहा था–कि कश्मीर में मुसलमान बहुसंख्यक हैं, इसलिए कोई गैर मुस्लिम यहां का मुख्यमंत्री नहीं बन सकता जबकि पीडीपी नेता और महबूबा मु ती के पिता जी देश के गृहमंत्री रह चुके है और देश में तीन राष्ट्रपति (जाकिर हुसैन जी, फख्रुददीन जी, कलाम जी) और आज भी उपराष्ट्रपति मुस्लिम है। क्या यह सहिष्णुता सिर्फ हिन्दुओं के लिए है? यही नहीं भारत के अन्य राजस्थान, महाराष्ट्र, आसाम, और बिहार आदि राज्यों में भी मुस्लिम मुख्यमंत्री रह चुके है। लेकिन इस बात को कहते वक्त ये तथाकथित बुद्धिजीवी धर्मनिरपेक्षता की जुगाली कर जाते हैं। यह लोग आज पाकिस्तान के कसूरी की किताब के विमोचन पर शिवसेना और देश को सहिष्णुता का पाठ पढ़ा रहे हैं लेकिन जब सलमान रुश्दी की किताब शैतानी आयते (सेटेनिक वर्सेस) पर प्रतिबंध लगाया गया जब औवेसी बंधु15 मिनट पुलिस हटाकर हिन्दुओं को देख लेने की बात कहता है तब इनके असहिष्णुता के मापदंड क्या थे? इनके कृत्य देखकर वरिष्ठ लेखिका कृष्णा सोबती शायद ठीक ही कहती है कि ये लोग लेखक या इतिहासकार नहीं सत्ता के माफिया हैं जो इखलाक पर रोते है लेकिन कश्मीर पर इनके हलक सूख जाते है।

इखलाक की मौत पर अपने पैने पंजे जमाने वाले ये राजनेता और कलाकार एक बार जनेऊ धारण कर श्रीनगर के लालचौक पर घूम आये। शायद सहिष्णुता का विलोम शब्द भी पता चल जायेगा! बहरहाल इन सबके बीच सबसे बड़ी बात यह कि इन कलाकारों, साहित्यकारों, और राजनेताओं को पाकिस्तान से आतंकी हाफिज सईद का बुलावा आया है। खुशी की बात है ये लोग जाएँ और भारत की तरह ही पाकिस्तान को भी सहिष्णुता सिखाएं ताकि वहां के हिन्दु भी खुली हवा में सांस ले सकें। यदि ये नहीं जाना चाहते तो एक बार कश्मीर, बंगाल, आसाम और केरल में भी सहिष्णुता का प्रचार करें।

संस्कृतम् मानवजीवनमस्योद्देश्यम् (जीवनस्योद्देश्यम्)

विदुषां कथनमस्ति यत् 'प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दो पि न प्रवर्तते'। साधारणो जनो पि प्रयोजनं विना कस्मिंश्चिदपि कार्ये न प्रवृत्तो भवति। मनुष्यो जन्म धारयति। तस्य जीवनस्य किंचिदुद्देश्यमवश्यमेव भवेत्। संसारे ये उद्देश्यहीना भवन्ति, ते कदापि सफला न भवन्ति।

जीवनस्य किमुद्देश्यं स्यादिति विचारे प्रथमतेतत् समक्षं समायाति यत् जीवनस्योद्देश्यं समुन्नतं स्यात्, येन जीवनस्य सफलता स्यात्। समुन्नतेषु उद्देश्येषु देशसेवायाः समाजसेवायाः परोपकारस्य जातेरुद्धरणस्य विद्योन्नतेश्च भावना सम्मुखमायाति। मनुष्यः सामाजिकः प्राणी वर्तते, अतो यदि समाजः समुन्नतो स्ति तर्हि सर्वे पि सुखिनो भविष्यन्ति। यदि समाजो न समुन्नतो स्ति तर्हि सर्वे पि विपत्तिग्रस्ता दीना हीनाश्च भविष्यन्ति। यदि देशः पराधीनो स्ति तर्हि मनुष्येषु स्वाभिमानस्य भावना न भविष्यति। अतो मनुष्यजीवनस्य मुख्यमुद्देश्यं भवति यत् स मानवजीवनस्य साफल्याय परोपकारं कुर्यात्, देशसेवां कुर्यात्, समाजसेवां कुर्यात्, विद्यायाश्चोन्नतिं कुर्यात्। एवं प्रकारेणैव जीवनं सफलं भवति।

जीवनस्य सफलतायै एतदपि सदा प्रयतनीयं यत् स कदाचिदपि पापं न कुर्यात्, कुत्सितं कर्म न कुर्यात्। पवित्रजीवनस्य यापनेनैव जीवनं सफलं भवति। उक्तं च–

मुहूर्तमपि जीवेत, नरः शुक्लेन कर्मणा।
न कल्पमपि कृष्णेन, लोकद्वयविरोधिना।।1।।

मनुष्यजीवने सदा सर्वैरेष प्रयत्नः करणीयो यत् स महाविद्वान् महापराक्रमी महायशस्वी सच्चरित्रो दानी परोपकारी समाजसेवी लोकहितकारी धर्मात्मा च स्याद्, अन्यथा मनुष्यजीवने पशुजीवने च न को पि भेदो स्ति। साधूक्तं च–

यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यैर्विज्ञानविक्रमयशोभिरभज्यमानम्।
तन्नाम जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ज्ञाः, काको पि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते।।2।।
यो नात्मजे न च गुरौ न च भृत्यवर्गे, दीने दयां न कुरुते न च बन्धुवर्गे।
किं तस्य जीवितफेन मनुष्यलोके, काको पि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते।।3।।

मनुष्यो जीवननिर्वाहाय यां कामपि आजीविकां ग्रहीतुं शक्नोति, पठनं पाठनं कृषि वाणिज्यं सेवाकर्म समाजसेवादिकं वा। परन्तु स सदाजीवनसाफल्याय सत्कर्म अवश्यं कुर्यात्। निरुद्देश्यं जीवनं विनश्यति। अतः कदाचिदपि उद्देश्यत्यागो न विधेयः। मनुष्यस्य सदुद्योगेन सदुद्देश्यमपि अवश्यं पूर्ण भवति।

साभार : रचानानुवादकौमुदी

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी द्वारा रचित पुस्तक 'रचानानुवादकौमुदी' सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। प्राप्त करने के लिए मो. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

बोध कथा

जिह्वा को वश में रखिए

एक सेठ जी थे। खांसी लग गई उन्हें, परन्तु उन्हें आदत थी खट्टा दही, खट्टी लस्सी, खट्टा अचार और इसी प्रकार की वस्तुएं खाने की। जिस वैद्यजी के पास जाते, वह कहता–''ये वस्तुएं खाना छोड़ दो, उसके पश्चात् चिकित्सा हो सकती है।''

अन्त में एक वैद्यजी मिले। उन्होंने कहा–'मैं चिकित्सा करता हूं। आप जो चाहें, खाते रहिये।'

वैद्यजी ने औषधि दी। ये सेठजी खट्टी वस्तुएं खाते रहे। कुछ दिन के पश्चात् मिले तो सेठजी बोले–'वैद्यजी, खांसी बढ़ी तो नहीं परन्तु कम भी नहीं हुई।'

वैद्यजी ने कहा–'आप मेरी दवाई खाते रहिये, खट्ठी चीजें भी खाते रहिये, इससे तीन लाभ होंगे।' सेठजी ने पूछा– कौन–कौन से ?

वैद्यजी बोले–'पहला यह कि घर में चोरी कभी नहीं होगी, दूसरा यह कि कुत्ता कभी नहीं काटेगा और तीसरा यह कि बुढ़ापा नहीं आएगा।'

सेठजी ने कहा–'ये तो वस्तुतः लाभ की बातें हैं, परन्तु खांसी में खट्टी वस्तुएं खाने से यह सब–कुछ होगा कैसे?' वैद्यजी बोले–'खांसी हो और खट्टी वस्तुएं खाते रहिए, तो खांसी कभी अच्छी होगी नहीं। दिन में खांसोगे, रात में भी, तब चोर कैसे आयेगा? खांस–खांसकर हो जाओगे दुर्बल। लाठी के बिना उठा नहीं जायेगा, चला नहीं जाएगा। हर समय लाठी हाथ में रहेगी तो कुत्ता कैसे काटेगा? और दुर्बलता के कारण मर जाओगे, यौवन में ही। तब बुढापा आएगा कैसे?'

सेठजी को समझ आ गई। परन्तु प्रायः हमें समझ नहीं आती। इस चटोरी जिव्हा के लिए पता नहीं, हम क्या–क्या करते हैं, किस–किस प्रकार अपना नाश करते हैं। सबसे बढ़कर अपनी मानवता को खो बैठते हैं।

साभार : बोध कथा

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

140वें जन्मदिवस (31 अक्तूबर) पर विशेष

आधुनिक भारत के चाणक्य लौह पुरुष सरदार पटेल

– डॉ. विवेक आर्य

आज लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती है। इस अवसर पर भारत को कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, कच्छ से लेकर कोहिमा तक भारतवर्ष को 529 छोटी बड़ी देशी रियासतों से एक महान राष्ट्र का स्वरुप देने वाले भारत माँ के सच्चे सपूत सरदार पटेल को नमन करते हैं। अगर सरदार पटेल को लौहपुरुष के साथ-साथ आधुनिक भारत का चाणक्य कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। जिस प्रकार महान कूटनीतिज्ञ आचार्य चाणक्य ने एक समय भारत देश पर हुए सिकंदर रुपी विदेशी आक्रमण को न केवल रोका अपितु अनेक खण्डों में बटें देश को चन्द्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में एकछत्र राज्य में परिवर्तित कर दिया था,उसी प्रकार सरदार पटेल ने भारत देश से न केवल अंग्रेज रुपी विदेशी आक्रमणकारियों को भगाया बल्कि उसे एक सूत्र में पिरोकर विश्व के एक मजबूत राष्ट्र में परिवर्तित किया। जिस प्रकार

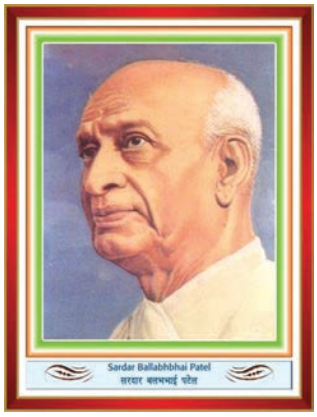

आचार्य चाणक्य की अर्थ शुचिता प्रसिद्ध थी उसी प्रकार सरदार पटेल की अर्थ शुचिता से आज के नेताओं को भी सीख लेने की आवश्यकता हैं। आचार्य चाणक्य से एक बार एक विदेशी मिलने आये। उन्होंने आचार्य चाणक्य का नाम तो बहुत सुना था पर उनसे मिलना पहली बार हुआ था। उन्होंने देखा की आचार्य ने कुछ कार्य करने के बाद एक दीपक को बुझा दिया और दूसरे दीपक को जला दिया। उन्होंने आचार्य चाणक्य से दीपक बुझाने का कारण पूछा। आचार्य बोले कि मैं पहले राजकार्य कर रहा था अब मैं स्वयं का कार्य कर रहा हूँ। पहले वाले दीपक में राज्य द्वारा दिया गया तेल जल रहा था जबकि अब वाले दीपक में मेरे स्वयं के पैसों से खरीदा हुआ तेल जल रहा है। वह व्यक्ति चक्रवर्ती सम्राट बनाने वाले आचार्य की अर्थ शुचिता और ईमानदारी से प्रभावित होकर बिना कोई शब्द कहे वहां से चला गया उसे उसका उत्तर मिल गया था कि आचार्य चाणक्य क्यों महान हैं। सरदार पटेल की पुत्री का नाम मणिबेन था। एक बार एक पुराने क्रन्तिकारी सरदार पटेल से मिलने गए। तब सरदार पटेल गृहमंत्री थे तो उन्होंने देखा कि मणिबेन चरखे पर सूत काट रही थी और उन्होंने जो साड़ी पहनी थी उसमें कई स्थानों पर टांके लगे हुए थे। उन्होंने इसका कारण पूछा। मणिबेन ने कहा कि जब पिताजी की धोती पुरानी हो जाती हैं अथवा फट जाती हैं तब मैं उसमे टांके लगाकर उसे साड़ी के रूप में इस्तेमाल कर लेती हूँ। वे क्रांतिकारी मन ही मन आधुनिक भारत देश को चक्रवर्ती राज्य बनाने वाले सरदार पटेल की सादगी और ईमानदारी से प्रभावित होकर धन्य कहकर चले गए। हमारे प्रधानमंत्री जी सरदार पटेल को कांग्रेसी बता रहे हैं क्या वे बता सकते हैं कि कांग्रेस का कोई एक नेता, सांसद अर्थ शुचिता में सरदार पटेल का अनुसरण करता हो? आज के राजनेताओं को बड़े से बड़े घोटालों को करने की बजाय सरदार पटेल की अर्थ शुचिता से प्रेरणा लेकर देश को लूटने की बजाय उसकी तरक्की करने की प्रेरणा लेनी चाहिए।

महात्मा आनन्द स्वामी के जन्मोत्सव पर आनन्द पर्व एवं 151 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में महात्मा आनंद स्वामी के जन्मोत्सव के रूप में आनन्द पर्व 16-17 अक्टूबर को डीएवी पब्लिक स्कूल, कोटा में मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. वागीश शर्मा के 'आओ चलें सेवा से आनंद की ओर' विषय पर प्रवचन हुए।

इस यज्ञ को पाणिनी महाविद्यालय, बनारस से पधारी डा. प्रीति विमर्शनी के ब्रह्मत्व में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षा साध्वी उत्तमा यति जी एवं मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा थे। मुख्य अतिथि महोदय ने कहा कि हमें महात्मा आनंद स्वामी के जीवन से त्याग व समर्पण की सीख लेनी चाहिए तथा जीवन में सदैव मुस्कुराते रहना ही ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है। उन्होंने वर्तमान में तथाकथित धर्म गुरुओं पर चुटकी लेते हुए आर्यसमाज के महत्त्व को स्पष्ट किया तथा सामाजिक, आध्यात्मिक उन्नति के लिये आर्य समाज को अहम् बताया और ऋषि परम्परा को जीवन में अपनाने की बात कही। समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. सिंह, निदेशक डीएवी प्रबंधकर्त्री समिति नई दिल्ली थे।

स्मारिका का विमोचन करते मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी, अध्यक्षा साध्वी उत्तमा यति जी एवं अन्य ।

इस अवसर पर आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चद्दा के नेतृत्व में आरविन्द पाण्डेय, श्रीचंद गुप्ता, नरदेव आर्य, रामप्रसाद याज्ञिक, चन्द्रमोहन कुशवाहा एवं अन्य आर्यसमाज पदाधिकारियों ने भी राजस्थानी चूनड़ी का साफा, मोतियों की माला, दुशाला व ओ३म् का सुसज्जित स्मृति चिन्ह भेंट करके प्रधान पूनम सूरी का सम्मान किया। इस अवसर पर अजय ठाकुर द्वारा लिखित तथा एम.एल. गोयल द्वारा निर्देशित नृत्यनाटिका श्रेय मार्ग के पथिक 'आनंद स्वामी' ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंच पर महात्मा स्वामी जी के संन्यास दृश्य देखकर सभी अतिथि व जनसामान्य भाव विभोर हो गये तथा अपने अश्रु नहीं रोक पाये। सहायता प्रकल्प के अन्तर्गत इस आयोजन के अंत में जरूरतमंदों को सिलाई मशीनें व ट्राई साइकिलें भी वितरित किये गए।

आर्यसमाज कोटा के सहयोग के वृहद स्तर पर वृक्षारोपण भी किया गया। श्री पूनम सूरी जी ने विद्यालय परिसर में औषधीय पौधा गूगल लगाकर वृक्षारोपण अभियान की प्रेरणा दी और कहा कि पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञ के साथ हमें वृक्षारोपण कार्यक्रम को भी प्रमुखता से अपनाना चाहिए। इस अवसर प्रकाशित स्मारिका का भी विमोचन किया गया।

– सरिता रंजन गौतम, प्राचार्या

आर्य समाज सागर पुर के हॉल का शिलान्यास सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर सागर पुर नई दिल्ली में 1 नवम्बर 2015 को श्री धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कर-कमलों द्वारा हॉल नं. 2 का शिलान्यास किया गया। कार्यक्रम में श्री विनय आर्य महामंत्री, श्री ओमप्रकाश आर्य उप प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री विक्रम नरूला उपप्रधान आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली, श्री प्रवीन राजपूत उपाध्यक्ष स्थायी समिति दक्षिण दिल्ली नगर निगम की गरिमामयी उपस्थिति रही। – *सुखवीर आर्य, मन्त्री, दिल्ली सभा*

डी.ए.वी स्कूल एवं आर्य गुरुकुल दयानन्द विहार के बच्चों का स्नेह मिलन

एक अनूठे स्नेह मिलन कार्यक्रम में डी. ए. वी स्कूल दयानन्द विहार के बच्चे 14/10/15 को प्रात: 8 बजे आर्य समाज दयानन्द विहार के अन्तर्गत चल रहे गुरुकुल के वनवासी बच्चों से मिलने के लिए आये। उन्होंने अपने से कुछ धन एकत्रित करके वनवासी बच्चों के लिए लेखन सामग्री व कुछ खाने-पीने का सामान उपहार स्वरुप लाये। कुछ समय तक दोनों समूहों ने आपस में परिचय किया तथा खेल खेले। वापिस जाते हुए गुरुकुल के बच्चों ने भी डी.ए.वी स्कूल के बच्चों को रिटर्न गि ट भी दिए, सामाजिक सामंजस्य का यह एक अनूठा कार्यक्रम था। आर्य समाज दयानन्द विहार के अधिकारिओं ने डी.ए.वी स्कूल की अध्यापिकाओं का अभिनन्दन व धन्यवाद किया।

आर्य वीर दल जीन्द के द्वारा सात दिवसीय आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

किनाना गाँव में आर्य वीर दल जीन्द द्वारा आर्य समाज किनाना के सहयोग से आयोजित सात दिवसीय आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर का रविवार 1 नवम्बर, 2015 को समापन हो गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने समारोह की अध्यक्षता की। शिविर में आर्य वीर दल के सुयोग्य व्यायाम शिक्षक श्याम आर्य और मनीष आर्य के मार्गदर्शन में गाँव के युवा लाठी, भाला, कराटे, सर्वांगसुंदर व्यायाम, दण्ड बैठक, योगासन, प्राणायाम और ध्यान का प्रशिक्षण दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने कहा कि आर्य वीर दल युवाओं के सर्वांगीण विकास का पावन पवित्र कार्य कर रहा है। आर्य वीर दल वह कार्य कर रहा है जिस तरफ किसी का ध्यान नहीं है। यदि हम अपने बच्चो को संस्कारित बनाना चाहते है तो उन्हें लगातार आर्य समाज और आर्य वीर दल के संपर्क में रखे।

भजनोपदेशक पं. रामनिवास आर्य ने कहा कि देश की नींव युवा का कंधा अत्यंत कमजोर हो गया है । इसे मजबूत बनाना चाहते हो तो चरित्र निर्माण पर बल देना होगा और जिसके लिए आर्य वीर दल के चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन नितांत आवश्यक है जिसे आर्य वीर दल जीन्द आपको गाँव-गाँव यथा समय उपलब्ध करा रहा है ।

आर्यवीरों को पुरस्कृत करते आचार्य विजयपाल जी

आर्य वीर दल हरयाणा के संचालक उमेद शर्मा ने उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा कि चरित्र निर्माण का कारखाना अगर कहीं है तो वह आर्यसमाज के पास है । आर्य समाज का युवा संगठन आर्य वीर दल देश के निर्माण के लिए युवा तैयार कर रहा है।

आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति यज्ञवीर आर्य ने बताया कि इसके बाद नन्दगढ़ गांव में सोमवार से अगला शिविर आयोजित किया जायेगा।

– *मन्त्री*

नवलखा महल उदयपुर में 18वां सत्यार्थप्रकाश महोत्सव सम्पन्न

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में 31 अक्टूबर 2015 से 2 नवम्बर 2015 तक 18 वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव भव्य रूप में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत् के पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, (सांसद, सीकर), स्वामी शारदानन्द जी सरस्वती, स्वामी आर्येशानन्द जी, स्वामी तत्पति जी, साध्वी उत्तमा यति जी, स्वामी सदानन्द जी (दयानन्द मठ, दीनानगर) जैसे शीर्ष संन्यासियों के अतिरिक्त गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र जी अग्रवाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, राजस्थान के लोकायुक्त माननीय न्यायमूर्ति श्री सज्जन

– शेष पृष्ठ 6 पर

उदयपुर सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में मंचस्थ श्री अशोक आर्य, उदयपुर के सांसद, स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद लोक सभा), श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी एवं भजन प्रस्तुत करते हुए भजनोपदेश श्री पन्नालाल पीयूष जी के पारिवारिकजन। उद्बोधन देते श्री विनय आर्य जी एवं सम्मेलन में पधारे आर्यजनों से भरा पण्डाल

विद्यालय के बच्चों द्वारा आयोजित रामायण की विशेष प्रस्तुति के कुछ दृश्य। अभिनेता मुकेश खन्ना को स्मृति चि देकर सम्मानित किया गया।

समारोह मे मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र आर्य जी, चेयरमैन जे.बी.एम. ग्रुप को स्मृति चि देकर सम्मानित करके श्री राजीव आर्य जी एवं श्री अरविन्द नागपाल जी। इस अवसर पर आर्यजनों एवं अतिथियों से खचाखच भरा तालकटोरा स्टेडियम।

– शेष पृष्ठ 7 पर

दीपावली पर विशेष

दीपावली पर्व का वैदिक स्वरूप आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

दीपावली का प्राचीन वैदिक नाम शारदीय नवसस्येष्टि है। शारदीय अर्थात् शरद का की। नव अर्थात् नया। सस्य अर्थात् फसल। इष्टि अर्थात् यज्ञ। इसका अर्थ हुआ - शरद का अन्न से हवन करने का विधान गोभिलगृह्यसूत्र, स्मार्तसूत्र, पारस्करगृह्यसूत्र, आपस्तम्बी गृह्यसूत्र और मनुस्मृति में मिलता है। वैदिक काल में कृषक व जनसामान्य नए अन्न का हवन करके उसका उपभोग करते थे। यह काल वर्ष में दो बार आता था-एक बसंतकाल में और दूसरा शरदकाल में। इसे वासन्ती नवसस्येष्टि और शारदीय नवसस्येष्टि कहा जाता था। ये दोनों पर्व नई फसलों से संबंधित थे। कालान्तर में इनका नाम होली और दीपावली पड़ा। हम यहां केवल शारदीय नवसस्येष्टि का विवेचन करेंगे।

यह पर्व मनाने के लिए कार्तिक मास की अमावस्या तिथि ही क्यों निश्चित की गई है, जिस प्रकार आश्विन मास की पूर्णिमा की चांदनी सर्वोत्कृष्ट होती है उसी प्रकार कार्तिक मास की अमावस्या रात उत्कृष्ट होती है। कारण यह है कि बारह अमावस्याओं में यह अमावस्या सबसे सघन अन्धकार वाली होती है। वेद में शरद तु की महिमा का उल्लेख है - ''जीवेम शतं पश्येम शरदः शतं श्रुणुयाम शरदः शतं'' - हम सौ शरद तुओं तक जीवित रहें, देखें, बोलें, सुनें आदि। अनेक कारणों से शरद काल की अमावस्या तिथि षियों को अभीष्ट लगा होगा।

सभी जानते हैं कि वर्षा के चार महीनों में वातावरण आद्र बन जाता है जिससे नाना प्रकार की सड़न उत्पन्न होने से अनेक रोगों के कीटाणु पैदा हो जाते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षा की समाप्ति के बाद का समय मौसम परिवर्तन का होता है। उससे लोग अस्वस्थ हो जाते हैं। इन सब से बचने के लिए एवं रोगों के कीटाणुओं के शमन के लिए यह नव यज्ञ अमावस्या के दिन निश्चित किया गया। इस दिन घर-घर हवन होता था। रात में सरसों के तेल व घी के दीये जलाए जाते थे। इन दीपों के जलने से नाना रोग के कीटाणुओं का विनाश हो जाता था और पूरा वातावरण रोगरहित और प्रफुल्लित हो जाता था। यज्ञ हवन की सुगन्ध से गांव-गली-मोहल्ला महक उठता था। इसी खुशी में लोग एक-दूसरे को मिष्ठान वितरण करते थे जिससे परस्पर प्रेमभाव की वृद्धि होती थी। जब घर बाहर सफाई करके रात में उन्हें दीपों से सजाया जाता था तब अमावस्या की वह रात तारों की शोभा को प्राप्त होती थी। इसी शोभा को लक्ष्मी नाम दिया गया। धीरे-धीरे शारदीय नवसस्येष्टि नाम लुप्त हो गया और दीपावली नाम प्रचलन में आ गया।

हमारे षि-मुनि पर्यावरणविद् थे। वे कोई ऐसा कार्य नहीं करते थे जिससे पर्यावरण की क्षति हो। इस हवन-यज्ञ के माध्यम से पर्यावरण की संशुद्धि हो जाती थी। कुछ लोग इस पर्व को रावण वध के पश्चात् अयोध्या आगमन से जोड़ते हैं, किन्तु राम ने रावण का वध चैत्रमास में किया था और उसी मास में लौटे थे। तुलसीदास ने भी लिखा है-चैत्रमास चौदस तिथि आई। मरयौ दसानन जग दुःखदाई।'' अतः यह पर्व राम के अयोध्या आगमन जोड़ना युक्त नहीं है। राम के पहले भी यह पर्व मनाया जाता था, क्योंकि प्राचीन वैदिक पर्व है। वाल्मीकि रामायण में भी इस दिन राम का अयोध्या आगमन नहीं लिखा।

इसी महापर्व के दिन आधुनिक वेदोद्धारक समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण हुआ था। आर्य समाज इस पर्व को निर्वाण दिवस के रूप में भी मनाता है। 30 अक्टूबर सन् 1883 ई. में मंगलवार के दिन उन्होंने इस नश्वर शरीर का परित्याग किया था। ''प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो'' यही उनका अंतिम वाक्य था। इस पर्व के दिन पटाखे और आतिशबाजी का प्रचलन बढ़ चला। जो पर्यावरण के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। न जाने कितनी दुर्घटनाएं हो जाती हैं, आग लग जाती है। सारी रात ध्वनि प्रदूषण होता है। वायु विषैली हो जाती है, कितने श्वास-रोगियों का दम घुटने लगता है। कितने बीमार और परेशान हो जाते हैं। इसलिए हमें पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से पटाखों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए परस्पर मिष्ठान वितरण का सहारा लेना अधिक उपयुक्त है। न जाने कितने अरबों-खरबों रूपयों को हम यों ही निरर्थक बहा देते हैं। यदि उस धन का उचित उपयोग किया जाए तो न जाने कितने लोगों को सुस्वास्थ्य मिले और धरती स्वर्ग बन जाए। प्राचीनकाल में इस पर्व के दिन पटाखे नहीं चलाए जाते थे। पता नहीं कहां से यह पटाखा पद्धति चल पड़ी। हम सबको इस पर विचार व मंथन करना होगा। पूरा विश्व पर्यावरण को लेकर चिंतित है। ऐसे में हम दीपावली महापर्व को पर्यावरण-प्रदूषण से मुक्त रखें तो ये देश-समाज सबका भला होगा।

इस दिन षियों की परंपरा का पालन करें। घी व सरसों के दिये जलाएं। घर-आंगन, राह, गली, मोहल्ला इन्हीं दीपों से सजाएं। हवन माध्यम से वायु की संशुद्धि करें। अपने पड़ोसियों को मिष्ठान वितरित करें। पटाखे-आतिशबाजियों से बचें। तभी हम षि ण मुक्त होंगे।

- अर्जुन देव चड्ढा,
4-प-28, विज्ञाननगर, कोटा

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

Glimpses of the Rig Veda

Continue from last issue :-

Mother's Joy : "My prosperity mounts up with the rising sun. My happiness knows no bound. My husband, surely, is the source of unparallelled glory. Triumphing over evils, I have an honorable life".

"I am the emblem of the house; I am the summit of honour. I am the supreme fame of the family. My husband conforms to my righteous will. I have no rivals to compete my diligence".

"My sons are the destroyers of trouble makers. My daughter is a virtuous ruler in her own right. I am victories. My husband has wide reputation and honour".

उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भगः। अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः।। (ऋ. 10.159.1)
अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी। ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत्।। (ऋ. 10.159.2)
मम पुत्राः शत्रुहणो थो में दुहिता विराट्। उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः।। (ऋ. 10.159.3)

Ud asau suryo agad ud ayam mamako bhagah I
aham tad vidvala patim abhy asaksi visasahih II
Aham ketur aham murdhaham ugra vivacani I
mamed anu kratum patih sehanaya upacaret II
mama putrah satruhano tho me duhita virat I
Utaham asmi samjaya patyau me sloka uttamah II

Felicitation to the Newly Wedded Bride : Society begins with the pairing of an individual with his or her mate. The Vedas provide for the highly evolved concept of married life. The bride and bridegroom come to the place of marriage and the bride is felicitated:

"Fortunate is the bride, come, behold her, having given due felichations, depart to your homes to come again to pray for the favour of God when they are blessed with children". "Be a queen to your father-in-law, be a queen to your mother-in law, be a queen to your husband's sisters, be a queen to your husband's brother".

सुमंगलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन।। (ऋ. 10.85.33)
सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्वां भव। ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु।। (ऋ. 10.85.46)

Sumangalir iyan vadhur imam sameta pasyat I
Saubhagyam asyai dattvayathastam vi paretan II
Samrajni svasure bhava samrajni svasrvam bhava I
nanandari samrajni bhava samrajni adhi devrsu II

To be Continued.....

पृष्ठ 5 का शेष

सिंह कोठारी, राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाब चन्द कटारिया, उदयपुर नगर निगम के महापौर श्री चन्द्रसिंह कोठारी, राजीव गांधी जनजाति विश्वविद्यालय के कुलपति श्री टी.सी.डामोर, महाराज कुमार लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, पूर्व सांसद रासासिंह रावत ने समरोह को भव्यता प्रदान की। आर्य जगत् के उपस्थित मूर्धन्य विद्वानों में आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, आचार्य वेदप्रिय शास्त्री, आचार्य डॉ.सोमदेव शास्त्री आचार्या डॉ. सूर्या जी, व्याकरणाचार्य श्री हरिप्रसाद जी, श्रीमती पुष्पा जी शास्त्री एवं भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ, श्री अमरसिंह, श्री सत्यपाल सरल, श्री केशवदेव शर्मा, श्री अशोक आर्य आदि का नाम उल्लेखनीय है।

समारोह में उपस्थित श्रोतागण भी भारी संख्या में उपस्थित थे। प्रातःकालीन दैनिक यज्ञ, ध्वजारोहण के अतिरिक्त वेद सम्मेलन, अन्धविश्वास निर्मूलन सम्मेलन, राष्ट्र निर्माण सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन के माध्यम से कार्यक्रम को विविध आयाम प्रदान किए गए जिनमें वक्ताओं व भजनोपदेशकों ने मंत्रमुग्ध प्रस्तुतियां दीं।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ने सत्यार्थ प्रकाश प्रणयन स्थली नवलखा महल को शनैःशनैः एक स्मारक का स्वरूप प्रदान कर दिया है। यद्यपि इसे और भी चित्ताकर्षक बनाना शेष है। फिर भी आज यह जिस स्वरूप में है वहाँ सहस्रों पर्यटकों को प्रेरणा प्रदान कर रहा है। यहां की 'आर्यावर्त चित्रदीर्घा' धीरे धीरे लोकप्रियता को प्राप्त हो रही है और गत वर्ष पच्चीस हजार लोग इसे देखने को पधारे थे। इसी क्रम का विस्तार करते हुए किशोरों व युवाओं को विशेष रूप से भारत की प्राचीन स्वर्णिम संस्कृति के दर्शन कराने हेतु, चलचित्रों के माध्यम से उदयपुर के सैंकड़ों विद्यार्थियों का रोचक रूप में भारतीय महापुरुषों के जीवन से परिचय कराने हेतु 'माता लीलावन्ती सभागार' में न्यास के न्यासी एवं गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द जी अग्रवाल के दो लाख रु. के अनुदान से 'श्रीमती ब्रजलता आर्या स्मृति मल्टीमीडिया सेन्टर' की स्थापना की गई है। खचाखच भरे हॉल में जब न्यास द्वारा निर्मित ' षि जीवनी' एवं विचार टीवी द्वारा निर्मित 'स्वामी श्रद्धानन्द जी' की जीवनी से सम्बन्धित चलचित्रों का प्रदर्शन किया गया तो दर्शक मंत्रमुग्ध रह गए।

स्वामी सुमेधानन्द जी ने जहां इस प्रकल्प की एवं न्यास के द्वारा संचालित सभी कार्यक्रमों की भूरि भूरि प्रशंसा की वहां श्री विनय आर्य ने जगह जगह ऐसे मल्टीमीडिया सेन्टर स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। आर्य जगत् के ही एक प्रकल्प 'विचार टीवी' के निदेशक श्री सुरेशचन्द अग्रवाल ने इस सेन्टर को विचार टीवी का पूरा सहयोग दिलाने की बात कही।

न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह जी कोठारी ने जीवन में आध्यात्मिकता स्थापित करने पर जोर दिया क्योंकि आध्यात्मिकता के बिना आत्मबल का सृजन नहीं हो सकता। उन्होंने आह्वान किया कि षि दयानन्द के ग्रन्थों को मूल रूप में संरक्षित करने हेतु हर प्रकार से जुट जाना चाहिए। षि के मन्तव्यों को दृढ़ता के साथ प्रचारित प्रसारित करने के साथ और न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ.अमृत लाल तापड़िया द्वारा सभी को धन्यवाद दिए जाने के पश्चात् समरोह का समापन हुआ। *- डॉ. अशोक आर्य*

आर्य समाज दयानन्द विहार का 30वां वार्षिक उत्सव संपन्न

आर्य समाज दयानन्द विहार का 30वां वार्षिक उत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ 30 सितम्बर से 4 अक्टूबर 2015 तक मनाया गया. इस अवसर पर प्रात: 51000 गायत्री महायज्ञ, सायं संगीताचार्या श्रीमती सुदेश आर्य के मधुर भजन एवं डा. जयेन्द्र शास्त्री के सारगर्भित प्रवचन हुए। 03.10.15 को विशाल बाल सम्मलेन हुआ जिसमें विभिन्न स्कूलों के 200 बच्चों ने भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता का विषय था – "आतंकवाद – कारण व उपाय"। रविवार 4 अक्तूबर को इसी विषय पर हुई जिसमें ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत, श्री धर्मपाल जी आर्य तथा डा. जयेन्द्र शास्त्री ने प्रभावशाली ढंग से इस विषय की व्याख्या की। – ***ईश नारंग, मन्त्री***

आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली

61वां वार्षिकोत्सव

18 से 22 नवम्बर, 2015

महिला सम्मेलन : 18 नवम्बर

यजुर्वेदीय यज्ञ एवं वेदोपदेश

सायं 5:30 से 8:30 बजे तक

ब्रह्मा : आचार्य श्याम देव जी

पूर्णाहुति : 22 नवम्बर, 2015

प्रात: 7:30 से दोपहर 1 बजे

– ***जगदीश आर्य, प्रधान***

आर्यसमाज एटा (उ.प्र.) का

130वां वार्षिकोत्सव

15–16–17 नवम्बर, 2015

दोपहर 2 से 5:30 बजे

युवा सम्मेलन : 15 नवम्बर

महिला सम्मेलन : 16 नवम्बर

आर्य सम्मेलन : 17 नवम्बर

– ***पं. रामस्वरूप आर्य, प्रधान***

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ की स्मृति में वैदिक महोत्सव

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ की स्मृति में तीन दिवसीय महोत्सव 21 से 23 नवंबर 2015 को शास्त्रार्थ स्थल आनन्द बाग दुर्गा कुंड वाराणसी में आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित होगा। मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद) होंगे। – ***प्रमोद आर्य, मंत्री***

आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी का वैदिक महोत्सव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के तत्वावधान में 21 से 23 नवंबर 2015 के मध्य आर्य समाज आनन्द बाग, दुर्गा कुण्ड वाराणसी में वैदिक महोत्सव का आयोजन किया जाएगा जिसके अन्तर्गत यज्ञ, भजन, एवं प्रवचनों की त्रिवेणी प्रस्तुत की जाएगी। मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह (संसद एवं पूर्व पुलिस आयुक्त मुम्बई) होंगे।

– ***मंत्री***

यज्ञ एवं वेद कथा आयोजन

आर्य समाज एल ब्लाक आनन्द विहार हरिनगर, नई दिल्ली अपना 40वां वार्षिकोत्सव यज्ञ एवं वेद कथा के रूप में में 22 नवंबर 2015 को आयोजित कर रहा है। – ***महेन्द्र सिंह, मंत्री***

छोटे हाथ बड़ी कृतियाँ कार्यक्रम

आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित आर्य पब्लिक स्कूल हसन खाँ मेवाती नगर, अलवर में दिनांक 2 नवंबर 2015 को छोटे हाथ बड़ी कृतियाँ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ईश वंदना से हुआ। तत्पश्चात् ऋषि दयानन्द को नमन करते हुए। गीत –दयानन्द तेरा कैसे करें गुणगाण एवं रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति नन्हे मुन्हे बच्चों द्वारा की गई। निर्णायक श्रीमती मंजू शर्मा,सविता चौधरी एवं रश्मि टूटेजा रहीं। संचालन विद्यालय की छात्राओं ने किया। इस अवसर पर बच्चों द्वारा निर्मित विभिन्न मॉडलों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

– ***कमला शर्मा , निर्देशक***

आचार्य पद रजत जयंती समारोह

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम होशंगाबाद गुरुकुल के 104वां वार्षिकोत्सव के अवसर पर आचार्य जगत देव नैष्ठिक जी (स्वामी तस्पति जी परिव्राजक) आचार्य पद को सुशोभित करने के 25 वर्ष के पूर्ण होने के अवसर पर दिनांक 27 से 29 नवंबर 2015 को आचार्यपद रजत जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है।

– ***आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, सचिव***

आर्य समाज श्री गंगा नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज श्री गंगा नगर का वार्षिकोत्सव दिनांक 26 से 29 नवंबर 2015 के मध्य आयोजित होगा जिसके अंतर्गत सामवेद परायण यज्ञ एवं वेद प्रचारोत्सव का आयोजन किया जाएगा।

–***पंडित हर्षवर्धन शास्त्री***

शोक समाचार

श्री आदर्श कुमार शर्मा को पितृशोक

आर्यसमाज कर्मपुरा के प्रधान श्री आदर्श कुमार शर्मा जी के पूज्य पिता एवं आर्यसमाज कर्मपुरा के पूर्वाधिकारी एवं वरिष्ठ सदस्य श्री दयानन्द शर्मा जी का 28 अक्तूबर को 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 8 नवम्बर को उनके निवास पर सम्पन्न हुई, जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचि नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

निराश्रित बच्चों के बीच मनाया जन्मदिवस

आर्य विद्वान डॉ. अशोक आर्य की सुपुत्री मितिशा आर्या ने अपना जन्मदिवस रंगबाड़ी कोटा स्थित निराश्रित बालगृह मधुस्मृति संस्थान में रहने वाले बच्चों के साथ मनाया। इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा कोटा के तत्त्वावधान में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ किया गया। यज्ञ के उपरान्त जिला आर्य समाज सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा ने मितिशा आर्या को ओ३म् का पटका एवं माला पहनाकर आशीर्वाद प्रदान किया। संस्थान के बच्चों द्वारा भजन एवं गीतों के द्वारा शुभकामनाएं व्यक्त की गई। इस अवसर पर डॉ. अशोक आर्य के परिवार की ओर से बच्चों एवं उपस्थित जनों के लिए स्नेह भोज का आयोजन किया गया।

– **अरविन्द पाण्डेय, का. सचिव**

अमर शहीद करतार सिंह बलिदान शताब्दी समारोह

शहीद स्मृति चेतना समिति की ओर से 15 नवंबर प्रात: 8 से 10 बजे अमर शहीद करतार सिंह सराबा व गदर-आन्दोलन के शहीदों का बलिदान शताब्दी समारोह आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली में मनाया जाएगा। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य, साहित्यकार रवि चन्द्र गुप्ता व अनेक बुद्धिजीवी प्रेरक उद्बोधन देंगे। शहीदों पर सचित्र कॉमिक्स'' क्रान्ति गाथा'' का भी यहां लोकार्पण होगा।

– **चन्द्रमोहन आर्य -प्रेस सचिव**

पृष्ठ 5 का शेष

स्वर्ण जयन्ती समारोह ...

समारोह तालकटोरा स्टेडियम में बड़ी धूमधाम के साथ आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल (चेयरमैन, एम.डी.एच.) व मुख्य अतिथि एस. के. आर्य (सी.एम.डी., जे.बी.एम. ग्रुप) थे। इस समारोह के स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (सांसद, लोकसभा) ने अपने आशीर्वचनों से समारोह को कृतार्थ किया। इस भव्य समारोह की शोभा को अपनी उपस्थिति में सुभाष आर्य (महापौर, दक्षिणी दिल्ली न.नि.), रणबीर सिंह (एडिशनल पुलिस कमिश्नर, दिल्ली), जयप्रकाश अग्रवाल (चेयरमैन, सूर्या रोशनी लिमिटेड), योगेश मुंजाल (एम.डी, मुंजाल गोवा लि.), राकेश ग्रोवर (चेयरमैन ग्रोवर संस), धर्मपाल आर्य (प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) व विनय आर्य (महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने द्विगुणित कर दिया। कार्यक्रम में मुकेश खन्ना (चेयरमैन, चिल्ड्रेन फिल्म सोसायटी ऑफ इंडिया, बॉलीवुड स्टार, शक्तिमान-भीष्म पितामह, महाभारत) एवं स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। समारोह में आए हुए अतिथियों का स्कूल प्रबंधन ने बुके प्रदान कर हार्दिक स्वागत किया। कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह द्वारा गायत्री मंत्र के जाप ने कार्यक्रम को गति प्रदान की। स्वर्ण जयंती समारोह का मुख्य आकर्षण था विद्यालय के 1200 विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किया गया रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर आज का मानव कहां तक पहुंच गया है' के समय व अवस्थाओं को विभिन्न नृत्यों एवं नाटिकाओं द्वारा दर्शाया गया और इसका एकमात्र मुख्य उद्देश्य 'राष्ट्र प्रथम रहा जिसके माध्यम से उन विद्यार्थियों के दिलों में अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव साफतौर पर झलक रहा था, जो देश का उज्ज्वल भविष्य हैं।

इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय स्कूल के चेयरमैन सत्यानन्द आर्य, संयोजक राजीव आर्य, मैनेजर अरविन्द नागपाल, प्रधानाचार्या अंजलि कोहली एवं समस्त स्टाफ को जाता है जिन्होंने अपने समर्पण भाव से इस कार्यक्रम का मार्गदर्शन कर इसे सफल बनाया।

समारोह का शुभारंभ स्वामी विरजानन्द संस्कृत कुलम तिहाड़ गांव के छात्रों द्वारा सरस्वती वंदना से प्रारंभ हुआ, स्कूल की ही कक्षा दसवीं की एक छात्रा प्राप्ति, ने मंच पर सोलो सोंग की प्रस्तुति की। इस अवसर पर विद्यालय की पूर्व प्रधानाचार्या श्रीमती सरोज शर्मा एवं श्रीमती उमा भरद्वाज को तो सम्मानित किया ही गया, साथ ही विद्यालय के लिए विशेष उपलब्धि प्राप्त करने वाले 10 होनहार विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया।

आए हुए अतिथियों ने स्वर्ण जयन्ती के इस शुभ अवसर पर स्कूल की पत्रिका 'ज्योतिर्मय' का विमोचन किया। इस अवसर पर विश्वविख्यात जादूगर राजकुमार ने अपनी जादूगरी से सबको हत्प्रभ कर दिया। स्टेडियम के विशाल प्रांगण में उपस्थित जनसमूह ने जादू के करतब देखकर दांतों तले उंगली दबा ली।

विद्यालय के बारे में बताते हुए स्कूल के संयोजक राजीव आर्य ने बताया कि किसी ने नहीं सोचा था कि एक विद्यालय, जिसकी नींव सन् 1965 में रखी गई थी, 2015 तक पहुंचते-पहुंचते वह भारतवर्ष के एक बेहतरीन विद्यालय के रूप में उभरकर सामने आएगा। विद्या के इस आलय में विद्यार्थियों को न केवल किताबी शिक्षा दी जाती है अपितु सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म में भेद करना भी सिखाया जाता है।

एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल अपने विद्यार्थियों की काबिलियत को इस तरह निखारता है कि उनसे 'हर मुश्किल भी कहे कि आसान हूं मैं'। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं बल्कि इस वाक्य को सत्य में परिवर्तित किया।

समारोह में वेदों के महत्त्व को दर्शाते हुए छात्रों द्वारा राजीव नाट्य मंचन किया गया। इस अवसर पर देश के ऊपर प्राण न्यौछावर करने वाले शहीद वीरों को भी याद किया गया। कन्या भ्रूण हत्या पर स्कूल की छात्राओं ने बहुत ही मार्मिक प्रस्तुति दी। रामायण तथा महाभारत के कुछ अंशों को भी छात्रों ने अपने अभिनय से जीवंत किया। इस स्वर्ण जयंती समारोह को स्कूल के सभी छात्रों के अभिभवकों ने बड़े ही उत्साहपूर्वक देखा। अंत में प्रधानाचार्या श्रीमती अंजलि कोहली ने पधारे सभी अतिथियों एवं अभिभावकों का धन्यवाद किया।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 9 नवम्बर से रविवार 15 नवम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 12/13 नवम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 नवम्बर, 2015

बच्चों के ज्ञान विकास के लिए अमूल्य भेंट
बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

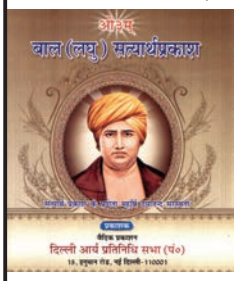

वह सन्तान बड़ी भाग्यशाली है जिसके माता-पिता धार्मिक व विद्वान हों। अत: माता-पिता का सुयोग्य होना आवश्यक है। जो माता-पिता और आचार्य शिष्य को उचित शिक्षा व ताड़न करते हैं वे मानो अपनी संतान एवं शिष्य को अपने हाथों अमृत पिला रहे हैं। इसके विपरीत जो लाड़न करते हैं वे विष पिला कर उनका जीवन नष्ट कर रहे हैं।

– सत्यार्थ प्रकाश: महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य मात्र 10 रुपये प्रति

नि:शुल्क वितरण हेतु 1000 प्रति लेने पर 20% की विशेष छूट

–: प्राप्ति स्थान :–

वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

फोन : 011-23360150, मो 09540040339

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा बैठक स्थगित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अन्तरंग सदस्यों को हार्दिक दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि दिनांक 15 नवम्बर, 2015 को आयोजित होने वाली अन्तरंग सभा बैठक सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी की पूज्या माताजी के निधन के कारण स्थगित कर दी गई है। बैठक की तिथि का पुन: निर्धारण करके आपको शीघ्र सूचित किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि यदि आपने रेलवे आरक्षण आदि करा लिया हो तो उसे निरस्त करा लें। बैठक स्थगित होने की सूचना सभी सदस्यों को एस.एम.एस. द्वारा भी प्रेषित कर दी गई है।

– आचार्य बलदेव, प्रधान

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द जी के चित्र

एवं

वेदमन्त्रों सहित

नए डिजाइनों में

मात्र 300/–रु. सैकड़ा

कैलेण्डर वर्ष 2016

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन: 23360150; 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : thearyasamaj.org से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह